गपगुपंगदास

चारु आनन्द

चित्राँकन: सुजाता सिंह

गपगुपंगदास

चीन की लोक कथा का रूपांतरण

चारु आनन्द

चित्राँकनः सुजाता सिंह

eklavya

गपगुपंगदास को गप मारने की बहुत आदत थी। "यह भी एक कला है, सबके बस की बात नहीं!" वह कहता था।

एक दिन, उसके
दोस्तों ने ताना मारा,
"अपनी इस अनोखी
कला से शहंशाह से
इनाम लो तो जानें!"

बस फिर क्या था, गपगुपंगदास पहुँच गया दरबार में।

बोला, "शहंशाह-ए-आलम, आपकी नगरी में इतना गज़ब हो गया, और आपको खबर तक नहीं!"

"क्यों ऐसा क्या हो गया?"
शहंशाह ने आश्चर्य से पूछा।

"हुजूर, जो हुआ वह आज से
पहले कभी न हुआ था। मेरा एक
जूता कहीं भाग गया!" उसने कहा।

"जूता भाग गया!" शहंशाह चौंके।

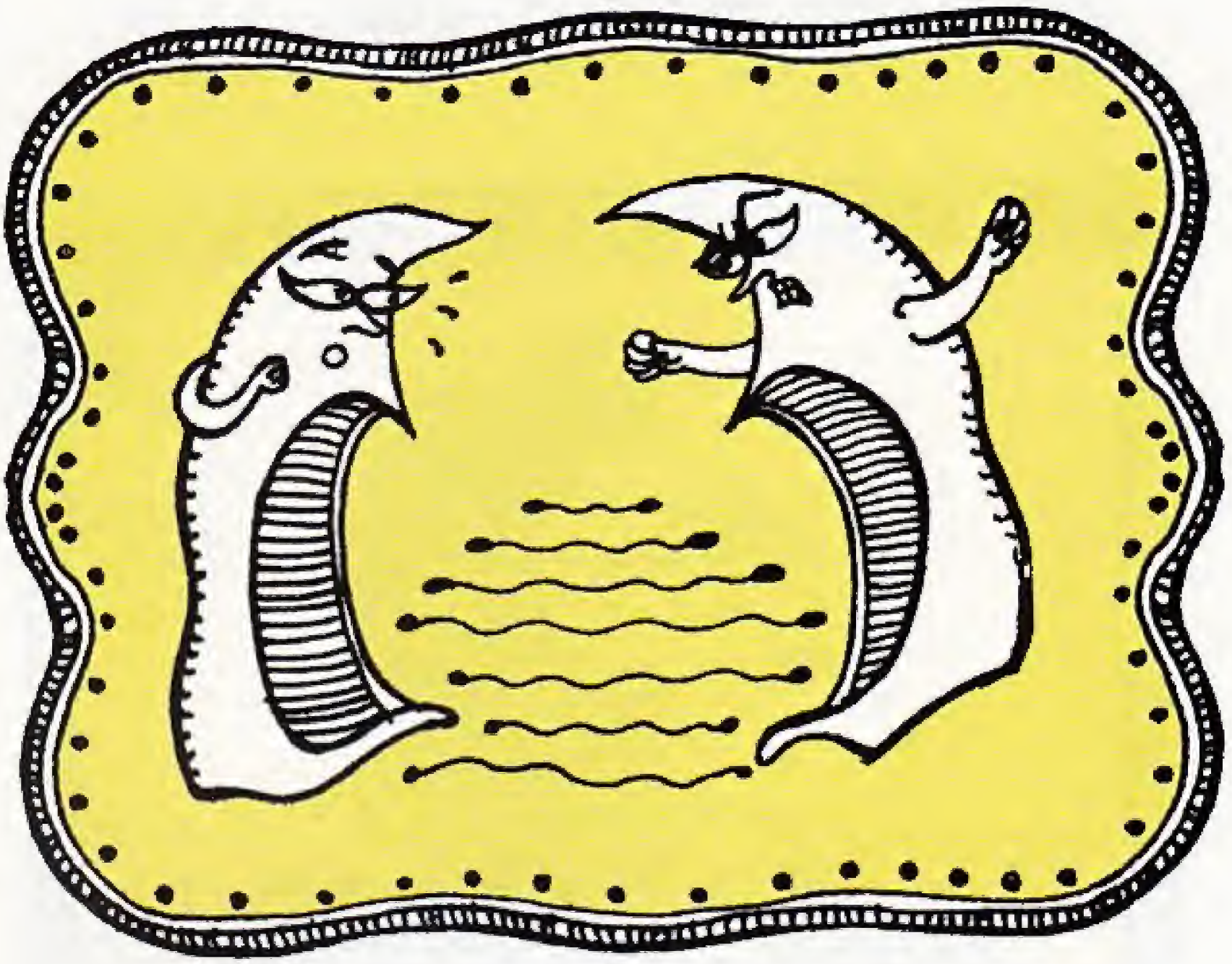

"जी हाँ! कल रात मैं अपने जूतों
को पॉलिश करते-करते सो गया।
अचानक शोरगुल सुनकर उठा।

देखा तो, दोनों जूते आपस में लड़ रहे थे।

मैंने पॉलिशवाले जूते को डांटा तो वह मेरा चोगा पहनकर गुस्से से बाहर निकल गया।”

शहंशाह समझ गए कि, यह गपगुपंगदास की कोरी गप है।

"मैंने अपना दूसरा जूता पहना
और निकल पड़ा - उस बदमाश
जूते की खोज में।

दुखी और परेशान मैं
उसके पीछे-पीछे भागा।
इधर भागा, उधर भागा।

भागते-भागते एक मटके पर
चढ़ गया, और चारों तरफ उसे
ढूँढने लगा।

तभी मुझे एक बुढ़िया अपनी ओर आती दिखाई दी।

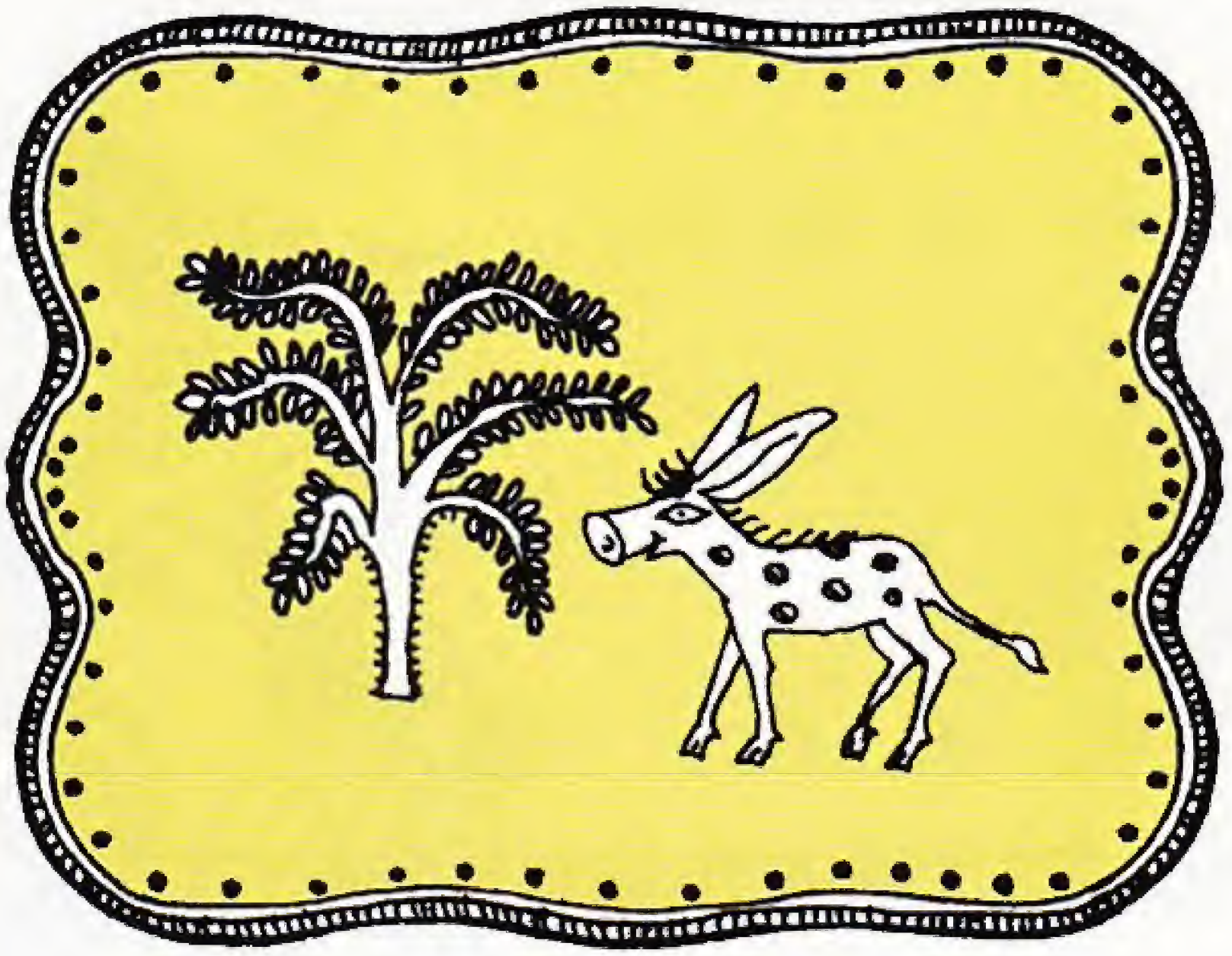

मैंने बुढ़िया को अपना हाल सुनाया। उसने मुझे अपना गधा दे दिया और बोली – "बेटा मेरा गधा बूढ़ा और ज़ख्मी है पर तुम इसे ले जा सकते हो।"

मैं निकल पड़ा अपने नए
साथी के संग, उस भागे हुए
जूते की तलाश में।

तभी मैंने एक खेत देखा।

वहाँ मुझे एक मुर्गा मियां
कुक्कड़, दिखाई दिया। वह
ज़मींदार की ज़मीन पर हल
चला रहा था।

"क्या तुम मेरे गधे को ठीक कर सकते हो?" मैंने मियां कुक्कड़ से पूछा।

उसने मुझे एक मूंगफली दी और कहा, "इसे जलाकर इसकी राख गधे की चोट पर लगा दो।"

मैंने वैसा ही किया। और
फिर आराम करने बैठ गया।
इतने में गधा गुनगुनाने लगा।

उसके गुनगुनाते ही ज़मीन
पर गिरी राख में से एक पौधा
निकलने लगा।

पलक झपकते ही पौधा
बड़ी-सी बेल बन गया।

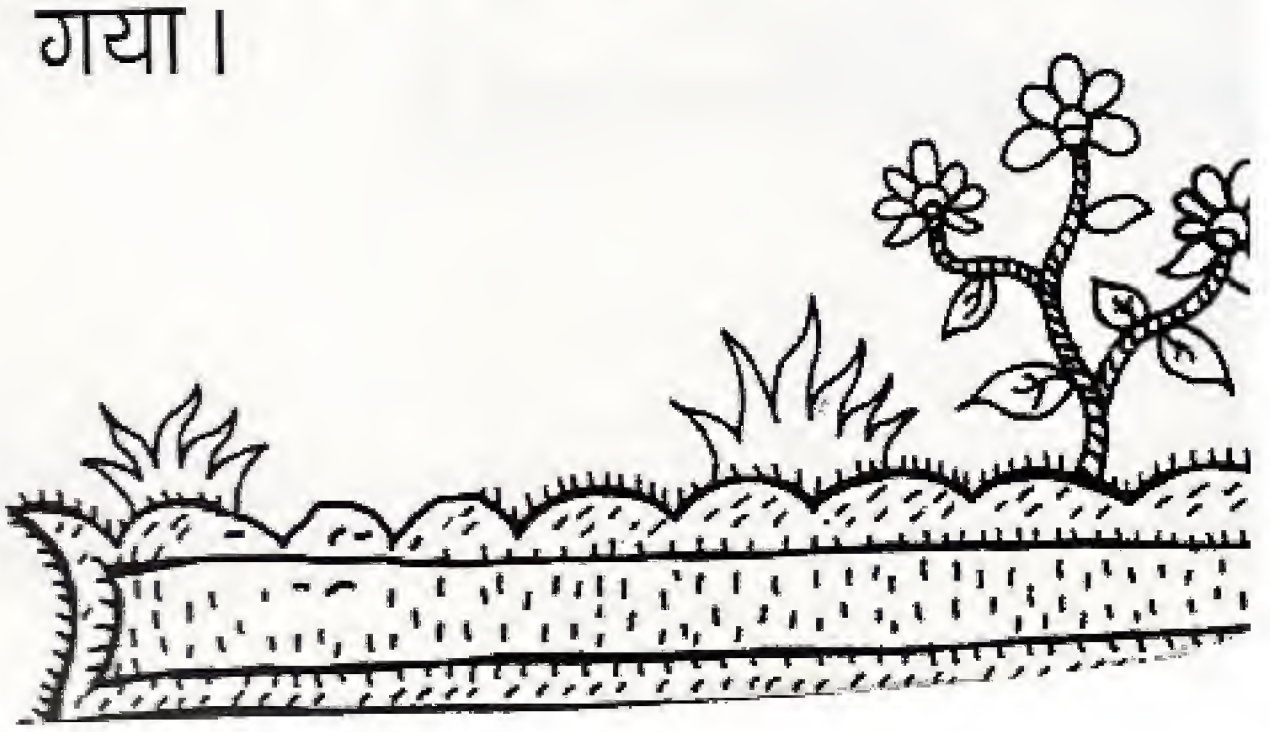

बेल पर तरबूज़ उगे हुए थे। तरबूज़ों को देखकर, उन्हें खाने का मन करने लगा।

पर समझ नहीं आ रहा था कि, बेल के ऊपर चढ़ूँ, तो कैसे?

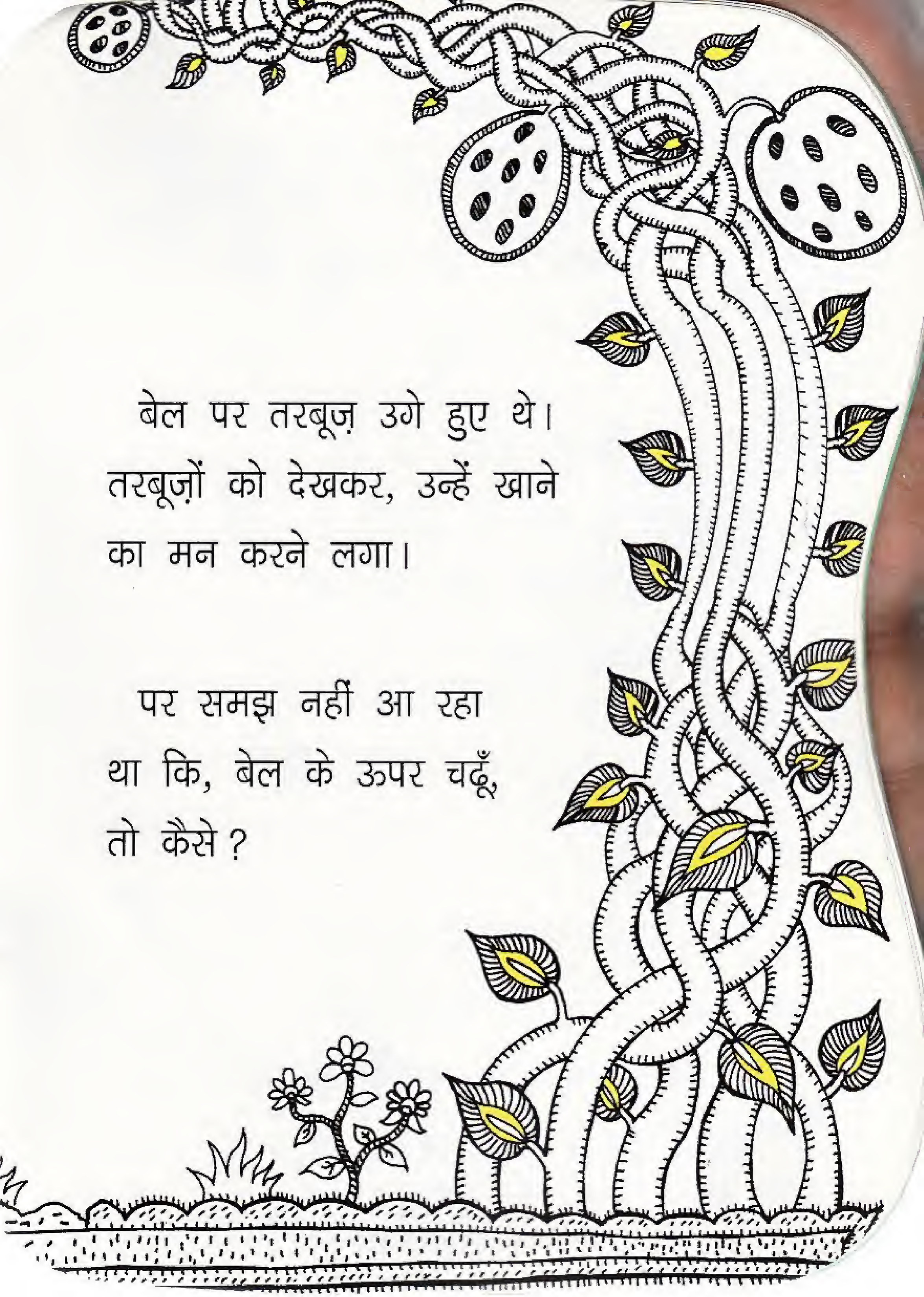

मैंने और गधे ने जब मिलकर सोचा, तो एक तरक़ीब सूझी।

मैं एक बड़े-से पत्थर पर बैठ गया। गधे ने ज़ोर से दुलत्ती मारी, मैं झटके से घूमा और बेल के ऊपर पहुँच गया।

वहाँ बहुत बड़े–बड़े
तरबूज़ लगे थे।

जैसे ही मैंने एक तरबूज़ चाकू से काटा, चाकू तरबूज़ के अन्दर गिर गया। उसे निकालने के लिए मुझे तरबूज़ के अन्दर कूदना पड़ा।

वहाँ मुझे एक आदमी मिला।
वह कुछ ढूँढ़ रहा था।

मैंने उससे पूछा, "भाई, आपने
मेरा चाकू देखा है क्या?"

"मुझे परेशान मत करो मेरे
चालीस ऊँट इसमें खो गए हैं!"
वह बोला।

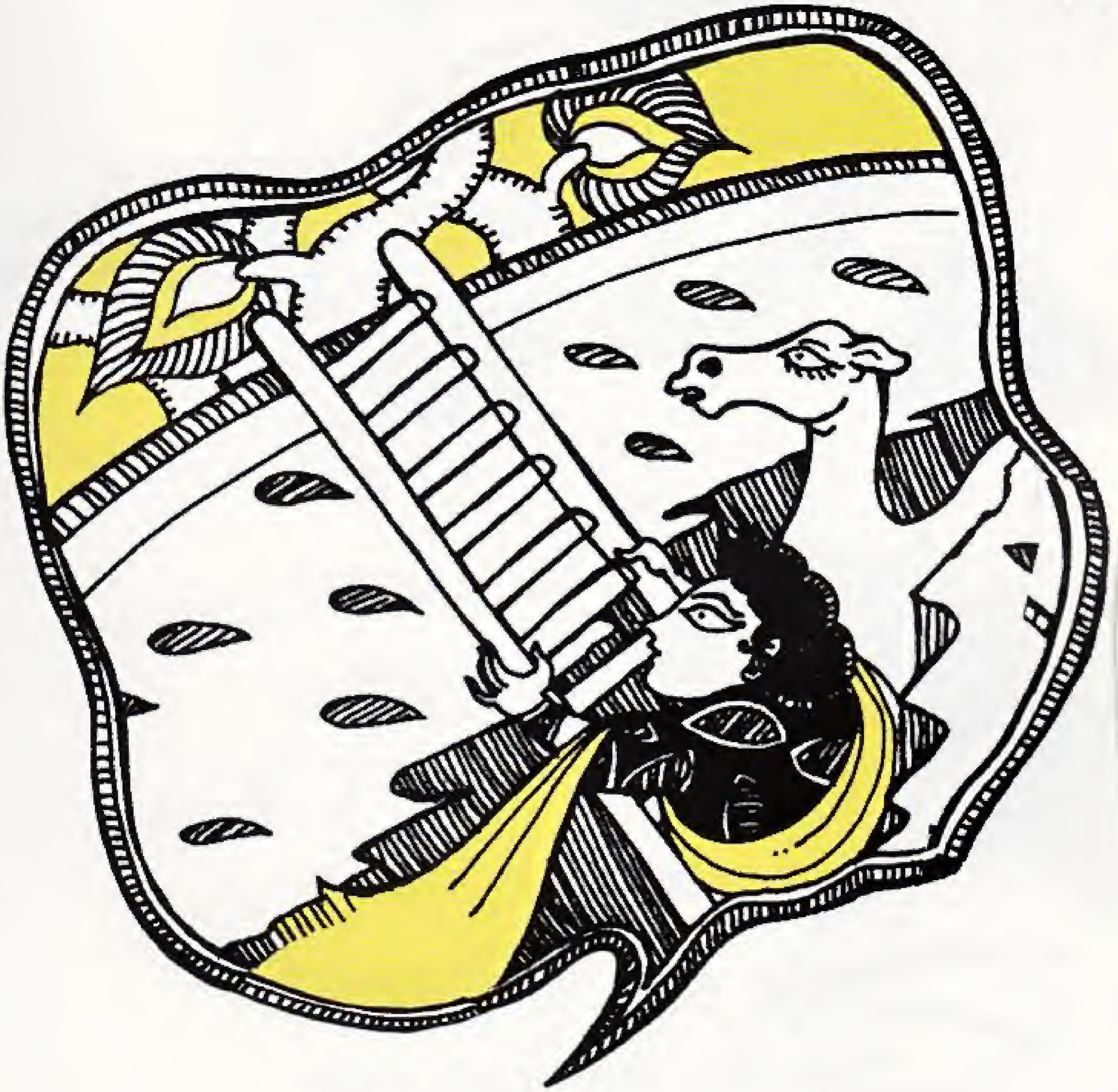

मैं घबरा गया। मैंने एक सीढ़ी
ढूँढ़ी और किसी तरह से तरबूज़ के
बाहर निकल आया।

बेल के ऊपर से नीचे
झाँका, तो क्या देखता हूँ कि,
मेरा जूता मेरे ही गधे पर
सवार होकर भागा चला जा
रहा था। मैंने उनका पीछा
किया और उन्हें पकड़ लिया।

और अब महाराज
मैं आपको अपना
इकलौता जूता भेंट
करने आया हूँ।”

शहंशाह को कभी भी
इतना मज़ा नहीं आया था।

उन्होंने गपगुपंगदास को उस जूते के बदले सलमे-सितारों वाली मख़मल की एक जोड़ी जूतियाँ भेंट कीं।

देखो! गपगुपंगदास कितनी
शान से नई जूतियाँ पहनकर
अपने दोस्तों से मिलने चले
जा रहे हैं!

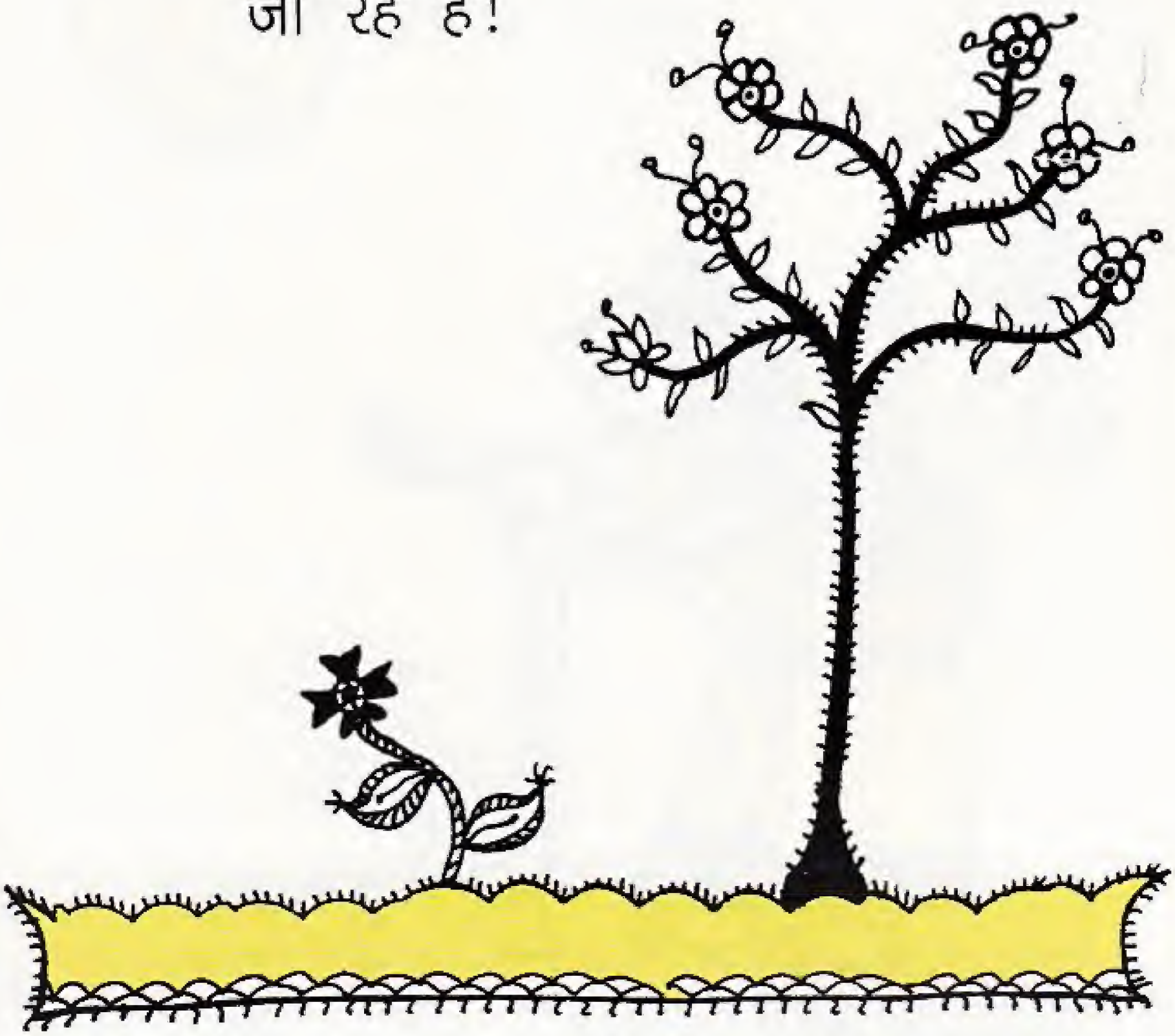

बुनो कहानी

गपगुपंगदास ने तो अपनी गप से जीता ईनाम! भरो तुम भी गपगुपंगदास की जैसी उड़ान। साथ दिए गए सभी पात्रों को लेकर बनाओ एक कहानी निराली।

बूढ़ी अम्मा

मख़मली जूती

रसीला तरबूज़

मियाँ कुक्कड़

धोबी का गधा

ढूँढो वह अनोखा जानवर
जो करना चाहता है, बादलों
की सैर!

और भरो रंग
अपनी कल्पना के!

ये शब्द अब हैं दोस्त हमारे

सीरीज संपादिका: गीता धर्मराजन

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है। इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

मेरी अगली कहानी

अगड़म, बगड़म, तिगड़म हम

झट-पट सीखें अक्षर हम।

200 दोस्त बनें कम से कम

तिगड़म अगड़म बगड़म हम!

KATHA

यह कहानी 'तमाशा' में सन् 1991 में प्रकाशित हो चुकी है
दूसरा संस्करण 2007, तीसरा संस्करण 2009, चौथा संस्करण 2010,
पाँचवा संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
तारा आर्ट प्रिन्टर्स प्रा. लि., नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89020-90-3
संपादकीय टीम: वैशाली माथुर, युक्ति बैनर्जी

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलने वाली खुशी को बढ़ावा देना।

ए 3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017

दूरभाष: 26524350, 26524511, फैक्स: 26514373
ई मेल: ilr@katha.org, इंटरनेट: http://www.katha.org

प्रोडक्शन टीम: प्रकाश आचार्य, बसन्त बिष्ट, विक्रम कुमार

जैसे बूँद-बूँद से गहरे सागर, रेत के
कणों से फैले हुए रेगिस्तान बनते हैं,
वैसे ही नन्हे बच्चों की सूझ-बूझ से बनती हैं
मनोरंजक कहानियाँ। चलो ले चलते हैं तुम्हें
अबु, नूतन, कोकिला, जिश्नू ... से मिलाने।
क्या है इनमें कोई तुम्हारे जैसा ...?

कथा की किताब बच्चों के लिए
ISBN 978-81-89020-90-3
www.katha.org
रु. 75/-